Date – 10 June 2022

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक-2022

- हाल ही में जारी पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक-2022 में भारत 180 देशों में अंतिम स्थान पर है।

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक:

- पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक एक अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग प्रणाली है जो पर्यावरण की स्थिति और देशों की स्थिरता को मापता है।
- पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक को विश्व आर्थिक मंच द्वारा 2002 में पर्यावरण कानून और नीति के लिए येल केंद्र और अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान सूचना नेटवर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय केंद्र के सहयोग से पर्यावरण स्थिरता सूचकांक के रूप में द्विवार्षिक सूचकांक के रूप में लॉन्च किया गया था।

ढांचा:

- वर्ष 2022 के लिए ईपीआई को 40 प्रदर्शन संकेतकों की 11 निर्गम श्रेणियों में विभाजित किया गया है।
- इसके प्रकाशनों की श्रेणियों का वितरण **3 नीतिगत उद्देश्यों के तहत किया गया है:**
- पर्यावर्णीय सेहत
- पारिस्थितिकी तंत्र जीवन शक्ति
- जलवायु परिवर्तन
- ये संकेतक राष्ट्रीय स्तर पर एक अनुमान प्रदान करते हैं कि कैसे अभिन्न देश पर्यावरण नीति लक्ष्य निर्धारित कर रहे हैं।
- EPI टीम पर्यावरणीय डेटा को ऐसे संकेतकों में परिवर्तित करती है जो देशों को 0-100 (निम्नतम से सर्वोत्तम) के पैमाने पर रेट करते हैं।

प्रमुख निष्कर्ष:

- डेनमार्क वर्ष 2022 के लिए रैंकिंग में सबसे ऊपर है, एक उपलब्धि जो ईपीआई द्वारा ट्रैक किए गए सभी मुद्दों पर मजबूत प्रदर्शन को दर्शाती है, साथ ही स्वच्छ ऊर्जा भविष्य और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने के प्रयासों में उल्लेखनीय नेतृत्व के साथ।
- यूनाइटेड किंगडम और फिनलैंड क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं, दोनों ने हाल के वर्षों में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए उच्च स्कोर अर्जित किया है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका वैश्विक पश्चिम में 22 समृद्ध/संपन्न लोकतंत्रों में से 20वें और कुल मिलाकर 43वें स्थान पर है।
- 9 के स्कोर के साथ भारत की 180वीं रैंकिंग पाकिस्तान, बांग्लादेश, वियतनाम और म्यांमार के बाद आती है।
- ईपीआई के अनुसार, भारत ने कानून के शासन, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण और सरकारी प्रभावशीलता के मानकों पर भी कम स्कोर किया है।
- EPI-2020 में भारत 27.6 के स्कोर के साथ 168वें स्थान पर था।
- EPI-2020 में, डेनमार्क को पर्यावरणीय स्वास्थ्य और स्थिरता को प्रथम स्थान दिया गया है।

ईपीआई का महत्व:

- ईपीआई निर्णय निर्माताओं को शीर्ष प्रदर्शन के ड्राइवरों की पहचान करने में सक्षम बनाता है
- ईपीआई डेटा के विश्लेषण से पता चलता है कि किसी देश की स्थिरता को बढ़ाने में वित्तीय संसाधन, सुशासन, मानव विकास और नियामक गुणवत्ता महत्वपूर्ण कारक हैं।
- इन संबंधों को उजागर करके, ईपीआई पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित और न्यायसंगत भविष्य के समर्थन में सतत विकास को बढ़ावा देने में मदद करता है।

स्वदीप कुमार

राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक

- विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस के अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने खाद्य सुरक्षा के पांच मानकों पर राज्यों के प्रदर्शन को मापने के लिए भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) का चौथा राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक (एसएफएसआई) जारी किया।

राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक:

- देश में खाद्य सुरक्षा पारिस्थितिकी तंत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता में सकारात्मक सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से वर्ष 2018-19 से राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक शुरू किया गया था।
- यह सूचकांक खाद्य सुरक्षा के पांच महत्वपूर्ण मानकों पर राज्यों के प्रदर्शन को मापने के लिए एफएसएसएआई (भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण) द्वारा विकसित किया गया है।

- मापदंडों में मानव संसाधन और संस्थागत डेटा, अनुपालन, खाद्य परीक्षण – बुनियादी ढांचे और निगरानी, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण और उपभोक्ता सशक्तिकरण शामिल हैं।
- सूचकांक एक गतिशील मात्रात्मक और गुणात्मक बेंचमार्किंग मॉडल है जो सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा के मूल्यांकन के उद्देश्य से एक ढांचा प्रदान करता है।
- वर्ष 2018-19 के लिए पहला राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक पहली बार 7 जून 2019 को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस पर घोषित किया गया था।

महत्त्व:

- सूचकांक हमारे नागरिकों को सुरक्षित और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने में मदद करेगा।

राज्य का प्रदर्शन:

सभी राज्य:

- तमिलनाडु राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक में सबसे ऊपर है, उसके बाद गुजरात और महाराष्ट्र हैं।

छोटे राज्यों में:

- गोवा पहले स्थान पर, उसके बाद मणिपुर और सिक्किम का स्थान है।

केंद्र शासित प्रदेशों में:

- जम्मू और कश्मीर, दिल्ली और चंडीगढ़ ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया।

खाद्य सुरक्षा दिवस:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) संयुक्त रूप से सदस्य देशों और अन्य संबंधित संगठनों के सहयोग से विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस मनाने की सुविधा प्रदान करते हैं।
- यह पहली बार वर्ष 2019 में अदीस अबाबा सम्मेलन और जिनेवा फोरम द्वारा "खाद्य सुरक्षा के भविष्य" के तहत खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने के लिए मनाया गया था।
- विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस, 2022 का विषय 'सुरक्षित भोजन, बेहतर स्वास्थ्य' है।

इस अवसर पर की गई अन्य पहल:

- एफएसएसएआई द्वारा की गई विभिन्न नवीन पहलों में ईट राइट रिसर्च अवार्ड्स और अनुदान – चरण II, ईट राइट क्रिएटिविटी चैलेंज – चरण III, स्कूल स्तर की प्रतियोगिता और आयुर्वेद आहार लोगो शामिल हैं।
- इस लोगो में आयुर्वेद आहार और पांच पत्ते हैं, जो प्रकृति के पांच तत्वों का प्रतीक हैं, इससे खाद्य उत्पादों को एक विशिष्ट पहचान बनाने और उन्हें पहचानने में आसानी होगी।

- खाद्य जनित रोग प्रकोप का पता लगाने और सूक्ष्मजैविक प्रक्रिया नियंत्रण, मछली और मछली उत्पादों के नमूने और परीक्षण पर एक मार्गदर्शन दस्तावेज जारी किया गया है।

स्वदीप कुमार

कबीर

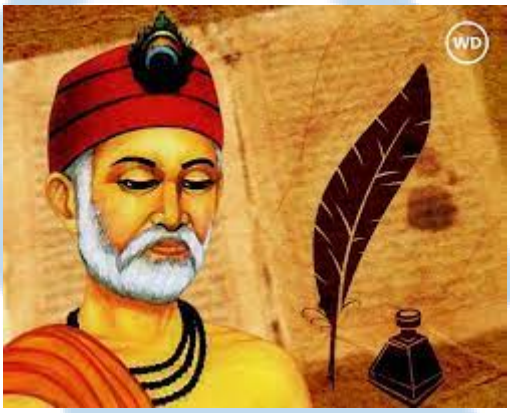

- हाल ही में राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद द्वारा 'स्वदेश दर्शन योजना' के तहत 'मगहर' (उत्तर प्रदेश) में 'संत कबीर अकादमी और अनुसंधान केंद्र' का उद्घाटन किया गया।

कबीर के बारे में:

YOJNA IAS

- संत कबीर दास 15वीं शताब्दी के दौरान भारत के एक महान प्रसिद्ध संत, कवि और समाज सुधारक थे। उनकी उत्कृष्ट रचनाएँ और कविताएँ 'परमात्मा' की महानता और एकता का वर्णन करती हैं।
- वे भक्ति आंदोलन के एक प्रमुख संत कवि थे।
- कबीर किसी भी प्रकार के धार्मिक भेदभाव में विश्वास नहीं करते थे और सभी धर्मों को सहजता से स्वीकार कर लेते थे।
- उन्होंने 'कबीर पंथ' नामक एक धार्मिक समुदाय की स्थापना की और उसके अनुयायी 'कबीर पंथी' कहलाते हैं।

- स्वामी रामानन्द का प्रभाव वैष्णव संत स्वामी रामानन्द ने कबीर को अपना शिष्य स्वीकार किया। कबीर दास की विचारधारा उनसे काफी प्रभावित थी।

निर्गुण परंपरा:

- 'निर्गुण परंपरा' भक्ति आंदोलन के भीतर एक संप्रदाय है और 'संत कबीर' इस संप्रदाय के एक प्रमुख सदस्य थे। इस परंपरा में, भगवान को एक सार्वभौमिक और निराकार प्राणी माना जाता है।

प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियाँ:

- बीजक, सखी ग्रंथ, कबीर ग्रंथवाली और अनुराग सागर।
- उनके छंदों को सिख ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी शामिल किया गया है।
- उनकी रचनाओं का एक बड़ा हिस्सा सिखों के पांचवें गुरु, गुरु अर्जन देव द्वारा एकत्र किया गया था।
- संत कबीरदास की रचनाओं की पहचान उनके दो पंक्ति के दोहे हैं, जिन्हें 'कबीर के दोहे' के नाम से जाना जाता है।

जाति व्यवस्था के खिलाफ:

- कबीर ने 'जाति व्यवस्था' का कड़ा विरोध किया और ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले जटिल अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों को दूर करने की मांग की।
- उन्होंने अपने समय के अन्य प्रमुख संतों की तरह, यह तर्क दिया कि केवल भक्ति के माध्यम से, गहन प्रेम या ईश्वर की भक्ति के माध्यम से ही कोई मुक्ति प्राप्त कर सकता है।
- उन्होंने जातिगत भेदभाव को मिटाने की कोशिश की और एक 'समतावादी समाज' बनाने की कोशिश की।

स्वदीप कुमार